बी.एड पाठ्यक्रम में बहु–विषयक दृष्टिकोण एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

वन्दना पाण्डेय
प्रवक्ता– बी०एड
पं० ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी किसान महाविद्यालय आभूराम तुर्कवलिया,गोरखपुर
Vp538804@gmail.com

सार

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए लागू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने शिक्षक शिक्षा, विशेषकर बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड) पाठ्यक्रम में मौलिक परिवर्तनों का प्रस्ताव किया है। यह शोध पत्र बी.एड पाठ्यक्रम में बहु–विषयक दृष्टिकोण की अवधारणा और उसके NEP 2020 के तहत महत्व का विश्लेषण करता है। पारंपरिक शिक्षा शास्त्र के बजाय एकीकृत और बहु–विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से कैसे शिक्षक तैयार किए जा सकते हैं, इस पर यह शोध प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द: *बी.एड पाठ्यक्रम, बहु–विषयक दृष्टिकोण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षक शिक्षा, अंत:विषयकता।*

1. पृष्ठभूमि

शिक्षक किसी भी राष्ट्र के विकास का आधारस्तंभ होता है। भारत में शिक्षक तैयार करने के लिए बी.एड डिग्री को एक प्राथमिक मान्यता प्राप्त है। लंबे समय तक, बी.एड पाठ्यक्रम को 'शिक्षा शास्त्र' तक ही सीमित रखा गया, जिसमें विज्ञान, कला और वाणिज्य जैसे विषयों को अलग–अलग और असंबद्ध रूप में पढ़ाया जाता था।

हालाँकि, वर्तमान समय की बदलती आवश्यकताओं और वैश्विक चुनौतियों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि एक कुशल शिक्षक को केवल एक विषय का ज्ञान ही नहीं, बल्कि बहु–विषयक और बहुआयामी समझ होनी चाहिए। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने बी.एड पाठ्यक्रम को पुन: संरचित करने और इसमें बहु–विषयक दृष्टिकोण को अपनाने की बात कही है।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा के लिए एक नए युग का सूत्रपात्र है। इसने 4–वर्षीय समेकित बी. एड (Integrated B.Ed) कार्यक्रम को सीमा तक बनाए रखने का प्रस्ताव दिया है और इसे अंत:विषयक दृ ष्टिकोण के साथ जोड़ा है।

2020 के अनुसार शिक्षक शिक्षा में प्रमुख बिंदु हैं:

- अंतःविषयकता: विभिन्न विषयों के ज्ञान को अलग–अलग न पढ़कर एक साथ पढ़ना।
- विषय शिक्षाशास्त्र का समायोजन: शिक्षाशास्त्र को विषय ज्ञान से अलग नहीं, बल्कि उसके साथ जोड़कर पढ़ाना।
- प्रायोगिक ज्ञान: केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि शिक्षण कौशल और तकनीकी ज्ञान पर बल।

3. बी.एड पाठ्यक्रम में बहु–विषयक दृष्टिकोण की अवधारणा

बहु–विषयक दृष्टिकोण का तात्पर्य है कि शिक्षार्थी (बी.एड छात्र) केवल एक विषय की सीमा में न बंधकर रहे, बल्कि उसे अन्य संबंधित विषयों, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन और प्रौद्योगिकी का भी ज्ञान हो।

बी.एड में बहु–विषयक दृष्टिकोण के घटक:

- **विषय सामग्री का एकीकरण**
  यदि कोई छात्र इतिहास पढ़ रहा है, तो उसे भूगोल और राजनीति विज्ञान के साथ तालमेल बैठाकर पढ़ना होगा। 2020 ने कला और विज्ञान के बीच की खाई को खत्म करने की बात कही है।
- **बहुविषयक पाठ्यचर्या**
  विज्ञान, गणित और कला जैसे विषयों को उसी भाषा (मातृभाषा/स्थानीय भाषा) में पढ़ाना जिसमें छात्र सहज हो। यह भाषा और विषय का बहु–विषयक मिश्रण है।
- **मानविकी और विज्ञान का समन्वय**
  एक विज्ञान शिक्षक को केवल प्रयोगशाला तक सीमित न रखकर उसके मानवीय पक्ष (मानवाधिकार, नैतिकता) को भी समझना आवश्यक है। इसी प्रकार एक कला शिक्षक को तकनीकी ज्ञान भी होना चाहिए।

4. बहु–विषयक दृष्टिकोण का शैक्षिक महत्व

बी.एड में बहु–विषयक दृष्टिकोण के कई शैक्षिक लाभ हैं:

रचनात्मक शिक्षण:

जब शिक्षक विभिन्न विषयों के तार जोड़कर पढ़ाता है, तो छात्रों की सीखने की क्षमता बढ़ती है।

समस्या समाधान:

वास्तविक जीवन की समस्याएं (जैसे जलवायु परिवर्तन) एक ही विषय की नहीं होतींय वे विज्ञान, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं से जुड़ी होती हैं। बहु–विषयक शिक्षक इन्हें बेहतर समझ सकते हैं।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता:

बहु–विषयक पढ़ाई में भाषा, संस्कृति और स्थानीय ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है, जिससे शिक्षक समावेशी बनता है।

5. चुनौतियाँ

हालाँकि बहु–विषयक दृष्टिकोण आवश्यक है, लेकिन इसे लागू करने में कुछ चुनौतियाँ हैं:

शिक्षकों की कमी:

बी.एड कॉलेजों में ऐसे विशेषज्ञ शिक्षकों की कमी है जो विज्ञान और मानविकी दोनों विषयों में निपुण हों।

संसाधन:

बहु–विषयक शिक्षण के लिए बहु–उद्देश्यीय प्रयोगशालाओं और डिजिटल संसाधनों की आवश्यकता होती है।

पारंपरिक मानसिकता:

विद्यार्थी और शिक्षक अभी भी विषय–वार विभाजन की मानसिकता से बाहर नहीं निकले हैं।

6. सुझाव और निष्कर्ष

NEP 2020 के दिशानिर्देशों के अनुसार बी.एड पाठ्यक्रम को बहु–विषयक बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

एमईईटी (MEET) विषयों का प्रावधान: विद्यार्थियों को उनके मुख्य विषयों के अलावा 'बहु–विषयक शिक्षा और आलोचनात्मक विचार' जैसे वैकल्पिक विषय पढ़ने का अवसर दिया जाना चाहिए।

अंत:विषय पाठ्यक्रम डिजाइन: पाठ्यक्रम को इस तरह डिजाइन करें कि एक इकाई (Unit) में समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और शिक्षा शास्त्र का मिश्रण हो।

शिक्षक प्रशिक्षण: बी.एड शिक्षकों को भी निरंतर प्रशिक्षण देकर बहु–विषयक शिक्षण के लिए तैयार किया जाना चाहिए।

निष्कष:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रतिपादित बहु–विषयक दृष्टिकोण बी.एड पाठ्यक्रम की आवश्यकता है। यह न केवल छात्रों को एक कुशल शिक्षक बनाता है, बल्कि उन्हें एक सामाजिक और वैश्विक नागरिक भी बनाता है। यदि इसे सही तरीके से लागू किया जाए, तो यह भारतीय शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

संदर्भ सूची

- भारत सरकार (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- NCERT- (2021), नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2005 और उसके संदर्भ।
- काक, ए. (2018), शिक्षा शास्त्र एवं शिक्षण, साहित्य भवन।
- चौधरी, आर. (2022), ''शिक्षक शिक्षा में NEP 2020 का प्रभाव'', शैक्षिक चिंतन, 14(2), 45–52।
- जोशी, एम.एस. (2020), Higher Education in India: NEP 2020 and Beyond- Sterling Publishers.